तीन मुक्तक : फतह-ए-जिंदगी

-अंबिका प्रसाद पाण्डेय
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष अध्ययनरत, साहित्य और ज्योतिष मे गहरी रूचि,सतना (मध्य प्रदेश)
https://sahityacinemasetu.com/three-muktak-fatah-e-zindagi/

सच्चाई के वास्ते तो हम ख़ुदा से ले लेंगे रार तक
कभी भी नहीं रूकेंगें जीवन में मौत से हार तक
जब तक रहेगा अपने मन में एक अटल विश्वास
तब तक उठेंगी हिलोरें धरा से गगन के पार तक

जिंदगी तुझसे मिली हताशा में अलग करेंगे इस बार
ग़म में भी इतना मुस्कुराएंगे कि तु हो जाए गुलज़ार
ए मेरी जिंदगी अब तु मुझे चाहे जितने भी धोखे दे दे
बेवफ़ाई में भी वफ़ा करेगें तुम्हीं से करते रहेंगें प्यार

यहाँ पलता काल से भी बड़ा कोई विकराल है
जिसके पैर के रखते समूचा छा जाता भूचाल है
कठिनाइयों को जाकर बता दो देश के नौजवानों
हमारे पास सभी कालों का काल यौवनकाल है